कीर्त्तनिया नाट्य-परम्परा मे 'पारिजात-हरण' क स्थान निरूपित करू।

वैदिक कालहि सँ आहि प्रदेशक प्रतिष्ठा इतिहासक पृष्ठ-पृष्ठ पर ज्ञानक विकास-केन्द्रक रूप मे अंकित अछि, जाहि ठामक अनुशासन स्मार्तकालहु मे आचार-क्षेत्र मे वैदिक अवस्ताक प्रेरक भेल, जकर काव्य-कल्पना निरन्तर साहित्यिक रसक स्रोत सँ समृद्ध होइत रहल, जे प्राचीन कालहि सँ आर्यक सभ्यता एवं संस्कृतिक केन्द्र रहल — मिथिलाक रहने पावन भूमि पर उमापति उपाध्यायक आविर्भाव भेल। ई अपन सिद्ध लेखनी द्वारा मैथिली काव्य-काननक जे सेवा करल, से वस्तुतः अनुकरणीय, स्मरणीय एवं सराहनीय अछि।

मध्यकालीन मैथिली नाटकक जे परम्परा मिथिला मे छल, उएह कीर्त्तनिया नाम सँ प्रख्यात अछि। कीर्त्तनिया नाटकक नामकरणक प्रसंग मे विभिन्न प्रकारक मत अछि। डा० जयकान्त मिश्र अपन पुस्तक 'A HISTORY OF MAITHILI LITRATURE' मे एकरा 'कीर्त्तनिया नाटक' कहने छथि त' स्व० रमानाथ झा 'कीर्त्तनिया नाच' मानैत छथि। जे किछु हो, साहित्य समाजक दर्पण अछि जाहि मे समाजक प्रचलित रीति-रिवाज, रहन-सहन, राजनीतिक, आर्थिक तथा सामाजिक प्रतिच्छाया स्पष्ट दृष्टिगोचर होइछ। अतः तत्कालीन समाजक परिस्थिति पर बिना विचार करने एहि विषयक प्रतिपादन दोष-रहित नहि कएल जा सकैछ।

उमापति उपाध्यायक समय 14 शम् शताब्दी अछि। ओहि समय मे समाज मे विचित्र अराजकता पसरल छल। धर्मक अस्तित्व प्रायः नष्ट भए रहल छल तथा अमानवीय कार्यक प्रधानता भेल जा' रहल छल। मुसलमानी शासक हिन्दु लोकनिक हिन्दुत्वक नाश करबा पर तुलल छल। एहने परिस्थिति मे कोनो कवि, कथाकार आदि समाज-द्रष्टा वा' युग-स्रष्टाक रूप मे जन्म लैत छथि तथा काव्य-अस्त्रक सृजन क' कए समाजक पुनर्निर्माण करैत छथि। एही भावना सँ प्रेरित भए उमापतियो 'पारिजात-हरण' नाटक रूपी अस्त्रक सृजन करलन्हि, जकर उद्देश्य छल जनसमूहक ध्यान धर्माचरण, आत्मा एवं परमात्मा दिश करब।

पारिजात-हरण नाटक कथानक तथा रस'क आधार पर प्रकरण तथा नाटिका सँ निर्विवाद पृथक अछि। एकर कथानक कल्पित नहि, प्रत्युत हरिवंश पुराणक 124 एवं 135 म सर्गक ~~आधार~~ पर आधारित अछि। नाटकक आकार छोट अछि, तकर कारण ई जे नाटककार सामाजिक धर्माचरणक सान्ध्य-बेला मे कम-सँ-कम शब्द मे विराट तत्वक उद्घाटन करबाक इच्छा करल अछि। वस्तुतः नाटक 'पारिजात-हरण' अनेक दृष्टि सँ कीर्त्तनिया नाट्य-परम्परा मे महत्वपूर्ण स्थान रखैत अछि।

ई नाटक वीर रस प्रधान अछि तथा श्रृंगार आदि रस

Scanned with CamScanner

एकर अंग रूप मे विद्यमान अछि। किछु विद्वान एकरा शृंगारिक रस प्रधान मानैत छथि, किन्तु नाटकक आदिए मे प्रस्तुत उक्ति 'गरब हरब सुरराजक काज करब सब भाँति, भगत मीत अवपालन हारब परम पद आनि' एवं उद्घाटन पुष्प आनबाक लेल कृष्ण तथा इन्द्रक मध्य युद्ध होयब आदि तत्व प्रमाणित करैत अछि जे ई नाटक वीर रस प्रधान थिक।

मध्यकालीन मैथिली नाटकक सर्वप्रतिष्ठित नाट्यसाकार उमापति पारिजात-हरण मे कथावस्तु एवं चरित्र-चित्रण एतेक कौशलक संग नियोजित करने छथि जे अंक-विभाजनक अभाव, रूपक, लक्षणाक, विषकम्भक, प्रवेशक वा सन्धिसन्धानक विधिवत निर्वाह नहिओ रहैत एकर नाटकीयता साकार भए उठल अछि।

पारिजात-हरणक छोट-छीन कथावस्तु मे नाटककार केँ चरित्र-चित्रणक अवकाश यद्यपि कम छलन्हि, तथापि कथावस्तुक विकासक हेतु जे रोचक चरित्र-चित्रणक संयोजन करल अछि, से पाठक केँ सोझे अभिभूत क' दैछ।

"भूमिभारनिवारणाय दुरितच्छेदाय शुद्धात्मनाम्।
वेदार्थव्यवहारणाय च परित्राणाय धर्मस्य च ॥"

उपरोक्त पाँति मे उमापति प्रवेश कयनिहार श्रीकृष्णक चरित्र केँ धीरोदात्त एवं दाक्षिण्य नायकक लक्षण सँ परिपुष्ट कए देलन्हि अछि। श्रीकृष्णक चरित्र पारिजात-हरण मे ज्येष्ठा नायिका रुक्मिणी एवं कनिष्ठा नायिका सत्यभामाक संग कथा-वस्तुक अनुकूल चित्रित भेल अछि। एहि नाटक मे रुक्मिणी केँ पारिजातक पुष्प प्रदान करनिहार श्रीकृष्ण सत्यभामाक मान केँ भंग करबाक हेतु अद्भुत उक्ति-चातुर्यक परिचय देने छथि। मानिनी सत्यभामाक समक्ष प्रस्तुत कृष्ण केँ नाटककार पटुताक संग चित्रित कए कथावस्तुक रोचकता मे जे श्रीवृद्धि करने छथि, ओ सर्वदा प्रशंसनीय अछि। द्रष्टव्य थिक एहि सन्दर्भक एक उक्ति :—

"कमल बदन कुबलय दुहु लोचन अधर मधुरि निरमाने।
सगर सरीर कुसुम तुअ सिरिजल किए तुअ हृदय पखाने ॥"

तथा,

"अरुण पुरब दिसि बहलि सगरि निसि गगन मगन भेल चन्दा।
मुनि गेल कुमुदिनी तइयो तोहर धनि मुनल नहि मुखअरविन्दा ॥"

पारिजात हरण नाटकक संक्षिप्त कथानक एहि प्रकारें अछि जे देवर्षि नारद श्रीकृष्ण केँ पारिजातक फूल समर्पित करैत छथि। पारिजातक ओ पुष्प श्री कृष्ण अपन पत्नी रुक्मिणी केँ उपहार-स्वरूप दैत छथि। एहि पर श्रीकृष्णक दोसर पत्नी सत्यभामा मान क' लैत छथि आ ता धरि ओ मान-भंग नहि करत जा धरि श्रीकृष्ण सम्पूर्ण पारिजात वृक्ष आनबाक वचन नहि देथि। एहि हेतु श्रीकृष्ण इन्द्रक भोहिठाम

③

डॉ० पंकज कुमार
अतिथि शिक्षक

अपन आग्रह पठबैत छथि किन्तु इन्द्र एहि आग्रह कें अस्वीकार कए दैत छथि। तत्पश्चात् इन्द्रक संग श्रीकृष्णक युद्ध होइत अछि एवं युद्ध मे विजयी श्रीकृष्ण पारिजातक वृक्ष आनि सत्यभामाक आँगन मे रोपि दैत छथि। तत्क्षण नारद आबि कहैत छथि जे यावत् अपन प्रिय वस्तुक दान नहि करब तावत् पारिजातक ई वृक्ष अमरफल नहि देत। तत्पश्चात् सत्यभामा श्रीकृष्ण कें आ सुभद्रा अर्जुन कें दान करैत छथि एवं संगहि नारद कें एक-एक टा गाय सेहो दान करैत छथि। एहि प्रकारें, रुक्मिणीक श्रेष्ठता तथा सत्यभामाक प्रेमक मध्य फँसल श्रीकृष्णक उदात्त-चरित्र तथा नारदक चातुर्य एवं दूरदर्शिताक प्रमाणक संग एकर कथानकक इतिश्री होइत अछि।

कीर्त्तनिया नाटकक परम्परा द्वि रूप मे प्राप्त होइत अछि। पहिल परम्परा मे संस्कृत एवं प्राकृत रहैत छल तथा दोसर परम्परा मे मैथिलीक गीत। मिथिला मे कीर्त्तनिया नाटकक परम्परा अत्यधिक तीव्र गति सँ चलल। एहि परम्पराक सभसँ प्राचीन एवं प्रसिद्ध नाटक कवि कोकिल विद्यापति द्वारा रचित 'गोरक्ष विजय' नाटक अछि। एकर अतिरिक्त गोविन्दक 'नलचरित', रामदास झाक 'आनन्द विजय', ब्रह्मदासक 'रुक्मिणी हरण', कवि लालक 'गौरी स्वयंवर', नन्दीपतिक 'कृष्णकेलिमाला', रक्तपाणिक 'उषा-हरण' तथा भानुनाथक 'प्रभावति-हरण' उल्लेखनीय अछि। एवं प्रकारें कीर्त्तनिया नाटककार हर्षनाथ झा भेलाह जे 'उषा-हरण' एवं 'माधवानन्द' नाटक लिखलन्हि। किन्तु, कीर्त्तनिया नाटकक ई परम्परा अत्यंत सशक्त भेल, तकर श्रेय उमापति कृत 'पारिजात-हरण' कें छैक। जँ 'पारिजात हरणक' रचना नहि भेल रहैत तँ सम्भव छल जे कीर्त्तनिया नाटक कें ओ श्रेय नहि भेटितैक, जे आइ भेटल छैक। पारिजात हरणक नाटक मे संवाद चुस्त एवं मार्मिक अछि तथा अनेक स्थल पर गीतक सुन्दर समावेश कएल भेल अछि। गीत सभक शीर्षक पर रागक नामक सेहो उल्लेख अछि। पारिजात-हरण नाटक कीर्त्तनिया नाट्य-परम्परा मे वस्तुतः महत्वपूर्ण स्थान रखैत अछि।

मिथिलाक ई ~~नाट~~ मध्यकालीन नाट्य-परम्परा पारसी थियेटरक आगू नहि टिक सकल आ एकर अन्त भए गेल। कीर्त्तनिया नाटकक प्रसंग ध्यान देबा योग्य विशेष बात ई जे एहि मे धार्मिक एवं साँस्कृतिक पृष्ठभूमिक आधार पर लोकरुचिक अनुकूल मनोरंजन करबाक प्रयत्न कएल गेल अछि आ से सभ तत्व 'पारिजात हरण' मे विधमान अछि।

अन्त मे ई कहब आवश्यक जे मैथिली साहित्यक उपवन मे स्वच्छन्द विचरण करैत उमापति 'पारिजात हरण'क रचना कए काव्यगरिमाक सौन्दर्यक श्रीवृद्धि अत्यंत चमत्कारक संग कएने छथि। हिनका काव्य मे छन्द-विधान, शब्द-योजना तथा भावक प्रांजलता सराहनीय अछि। एहि नाटक मे ई भावक प्रसादिकता एवं रसक पीयूषवर्षा कए भावाभिव्यंजकताक मञ्जुल प्रदर्शन अलंकारक रमणीय सुषमाक संग कएने छथि।

Scanned with CamScanner